शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

शोध कार्य में भारतीय दृष्टि एवं प्राचीन भारतीय चिंतन पर शोध की प्रासंगिकता

- प्रो. मोहन लाल छीपा*

प्रस्तुत शोध पत्र में लेखक ने भारतीय शोध के वर्तमान परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए इसकी चिन्ताजनक स्थिति को उभारने का प्रयास किया है। इसी के साथ उसने प्राचीन भारतीय चिन्तन के कुछ महत्वपूर्ण पक्षों पर शोध किये जाने की प्रासंगिकता के बारे में भी जानकारी दी है।

विषयसंकेत:-शोध, भारतीय दृष्टि, प्राचीन भारतीय चिन्तन, शोध प्रासंगिकता

शोध ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाता है। यह ज्ञान के खोज की प्रक्रिया या कुछ तथ्यों को प्रतिष्ठित करने के लिए व्यवस्थित अन्वेषण है। व्यवहारिक शोध (Applied Research) से तात्पर्य इस धरती से जुड़े विभिन्न वैज्ञानिक मामलों के अन्वेषण, निर्वचन तथा विधियों व पद्धति के विकसित करने से है जिससे मानवीय ज्ञान में अभिवृद्धि हो सके। ज्ञान की अभिवृद्धि के लिए शोध किसी विषय में व्यवस्थित अन्वेषण है। शोध से तात्पर्य 'Re-search' या पुन: खोज से है जिसका अर्थ है कि संबंधित विषय जानकारी में तो है परंतु किसी कारण से पुन: अध्ययन योग्य है।

शोध कई प्रकार का हो सकता है यथा ऐतिहासिक शोध (Historical Research), वर्णनात्मक शोध (Descriptional Research), सह-संबधात्मक शोध (Co-relational Research), कारण- परिणाम शोध (Causal-effect Research), प्रायोगिक शोध (Experimental Research), विशेष इकाई शोध (Case Study Research), मानव जाति शोध (Eskmographic Research), आर एण्ड डी (Research and Development Research) आदि

प्रत्येक शोध की एक संरचनात्मक प्रक्रिया होती है जिसमें विषय का चयन, उद्देश्य एवं परिकल्पना, अवधारणात्मक परिभाषाएं एवं कार्यात्मक परिभाषाएं, संमकों का विश्लेषण, परिकल्पना की जांच तथा निष्कर्ष आदि शामिल होते हैं।

शोध से न केवल ज्ञान की अभिवृद्धि होती है बल्कि उससे हम वस्तुओं, व्यक्तियों, घटनाओं तथा अन्य तथ्यों के संबंध में अधिक व नई जानकारी प्राप्त करते हैं जिससे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में सुविधा होती है।

विश्वविद्यालय शिक्षा में पीएच.डी (Ph.D) या डी.फिल (D.Phil) अंग्रेजी भाषी क्षेत्रों में तथा अन्य जगह (Dr. Phil) उच्चतम शोध डिग्री है जो विश्वविद्यालयों में शिक्षण कार्य या शोध के लिए आवश्यक है। पहले धार्मिक (Theology), चिकित्सा (Medicine), तथा विधि (Law) के अतिरिक्त सभी विषय दर्शन (Philosophy) के अंतर्गत आते थे तथा विश्व की प्रथम डिग्री पेरिस में 1150 में दी गई थी। 19वीं सदी से पूर्व उच्चतम व्यवसायिक डिग्री धार्मिक (Theology - Th.D), विधि Law - (JD) तथा चिकित्सा में (M.D.) दी जाती थी।

एक सर्वे के अनुसार छात्रों में शोध के प्रति रूचि निम्न कारणों से कम होती है।

1. शोध में अधिक समय लगता है।
2. अच्छा शोध भारत में संभव नहीं है क्योंकि यहाँ का शोध स्तर निम्न है।
3. भारतीय शोध का बाजार मूल्य बहुत कम है।
4. शोध के लिए शिक्षक प्रेरित नहीं करते।
5. छात्र के रूप में स्नातकोत्तर करने के बाद और 4-5 वर्ष देना संभव नहीं है।
6. मेरे शिक्षकों में शोध को ही कोई नहीं जानता।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

7. शोध के बाद व्यवसाय के अवसर सीमित होते हैं।
8. विदेशों की तुलना में भारत में शोध का क्षेत्र कम है।

शोध को बढ़ाने के लिए छात्रों से निम्न सुझाव सामने आए हैं। :-

1. शोध के बाद व्यवसाय अवसरों में बढ़ोतरी एवं नौकरी न मिलने पर कम से कम 50000/- रूपये मासिक भत्ता
2. नौकरी के समय अंशकालीन शोध अवसर
3. विभिन्न कंपनियों के आर एण्ड डी समूहों के साथ शोध पर समझौता।
4. शोध के साथ कम से कम एक वर्ष विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ कार्य का समझौता।
5. शोध पर पाठ्यक्रम कार्य में कमी
6. शोध पर परीक्षा की समाप्ति

विश्वविद्यालय अधिनियमों में शोध का प्रावधान

विश्व के सभी विश्वविद्यालय शोध के केन्द्र हैं। भारत के कुछ विश्वविद्यालय शोध में धर्म /पंथ व नैतिक विषयों को भी शामिल करते हैं। यथा

The powers of University (BHU Act 1925)

1. To provide for information in such branches of learning as the University may think fit, and to make provision for research and for the advancement and dissemination of knowledge.
2. To promote the study of religion, literature, history, science and art of vedic, hindu, Buddhist, Jain, Islamic, Sikh, Christian, Zoroastrain and other civilisations and cultures.

उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय विधेयक-२००८

(क) ऐसे विषयों में शिक्षण की व्यवस्था करना, जिन्हें विश्वविद्यालय उचित समझे और परामर्श सेवा सहित अनुसंधान, विस्तार कार्यों में ज्ञान की अभिवृद्धि एवं प्रकार के निमित्त व्यवस्था करना, परंतु यह अनुसंधान एवं विस्तार कार्यों के क्षेत्रों को ऐसी रीति से प्रोत्साहित किया जाएगा, जिससे उच्च शिक्षा/ज्ञान के तीन क्षेत्रों में शिक्षा प्रथम होने के कारण शिक्षण के कृत्यों का अतिक्रमण न हो,

(ख) शिक्षण, अनुसंधान एवं विस्तार कार्यों का पुनरावलोकन और अन्य विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं के साथ परामर्श व सहयोग और उद्यमिता विस्तार ऐसी रीति से, जैसा विश्वविद्यालय उचित समझे जिससे शैक्षणिक अभिवर्द्धन व वैज्ञानिक अनुसंधान की गति तीव्र करने और नई सामाजिक मांगों के साथ चलने के लिए अंतर/बहुविषयी केन्द्रों/विभागों की स्थापना को सम्मिलित किया जा सके।

(ग) शिक्षा की संभावनाओं के विस्तार हेतु राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय व अन्य संस्थाओं के साथ विश्वविद्यालय को संबंद्ध करना तथा उनसे सहयुक्त रहना।

(घ) छात्रों को रोजगार बाजार में प्रवेश करने और प्रतिस्पर्द्धी बनाने उनमें उद्यमिता को प्रोत्साहित करने, सुधी नागरिकों के रूप में सकारात्मक भूमिका निभाने के लिए सुसज्जित करने के उद्देश्य से उनके नैतिक चरित्र व क्षमता निर्माण की दिशा में कार्य करना।

Aligarh Muslim University Act 1920

1. To promote oriental and Islamic studies and give instructions in Muslim theology and religion and to impart moral and physical training.
2. To Promote the study of religions, civilisations and culture of India.
3. To promote espicially the educational and cultural advancement of the muslims of India.

भारत में उच्च शिक्षा / शोध का परिदृश्य :-

2001 की जनगणना के अनुसार भारत को जनसंख्या 102.9 करोड़ है जिसमें 53.2 करोड़ पुरूष तथा 49.6 करोड़ महिलाएं हैं। इनमें 64.8 प्रतिशत लोग साक्षर हैं जिसमें 75.3 प्रतिशत पुरूष तथा 53.7 प्रतिशत महिलाएं सम्मिलित हैं। शिक्षा की दृष्टि से भारतीय आश्रम व्यवस्था में ब्रह्मचर्य आश्रम को माना जाता है जिसमें 25 वर्ष तक बच्चे विद्या अध्ययन करते थे। वर्तमान में (2005-06) इस आयु समूह में विद्यार्थियों की जनसंख्या व नामांकन निम्नांकित सारिणी - 1 में दिया गया है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

शोध कार्य में भारतीय दृष्टि एवं प्राचीन भारतीय चिंतन पर शोध की प्रासंगिकता

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सारणी -१

ब्रह्मचर्य आश्रम के अनुसार विद्यार्थियों की कुल जनसंख्या व नामांकन 2005-06

शिक्षा का स्तर	आयु समूह वर्ष	कुल जनसंख्या			कुल नामांकन प्रतिशत	अजा	अजजा
		कुल	अजा	अजजा			
प्रारंभिक शिक्षा	6-14	19.4	3.4	1.7	94.9	101.9	106.7
माध्यमिक / उच्च माध्यमिक	14-18	9.4	1.5	0.8	40.4	36.6	28.7
उच्च शिक्षा	18-24	12.4	1.9	0.9	11.6	8.4	6.6
कुल	6-24	41.3	6.8	3.4	-	-	-

नामांकन की दृष्टि से माध्यमिक शिक्षा में आज 60 प्रतिशत तथा उच्च शिक्षा में 90 प्रतिशत बच्चे स्कूल / कॉलेज / विश्वविद्यालयों की पहुँच के बाहर हैं जो सबसे बड़ी चुनौती है।

उच्च शिक्षा में विभिन्न पाठ्यक्रमों के अनुसार नामांकन देखें तो स्थिति और भी चिंताजनक नजर आतो है। इसे सारणी -2 में दर्शाया गया है।

सारणी - २

उच्च शिक्षा में पाठ्यक्रमानुसार नामांकन (संख्या ००० में)

पाठ्यक्रम	कुल	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
पीएच.डी/डी.एस.सी/डी.फिल	36.0 (0.25)	3.6 (0.22)	1.5 (0.24)
एम.ए	491.5	76.6	25.0
एम.एस.सी.	230.2	23.1	4.5
एम.कॉम	156.7	13.4	8.0
बी.ए व बी.ए. ऑनर्स	3727.7	569.3	210.6
बी.एस.सी व बी एस सी ऑनर्स	1579.4	188.0	53.3
बी.कॉम व बी कॉम आनर्स	1455.5	135.0	47.9
बी.ई	1668.2	162.5	57.2
मेडिकल	305.6	44.6	19.3
बी.एड	244.8	32.4	9.4
खुला विश्वविद्यालय	773.9	110.7	90.0
पोली टेक्निक	690.4	67.6	16.0
अन्य	2973.5	183.4	66.3
कुल	14323.6 (11.6)	1610.9 (8.47)	609.1 (6.6)

सारणी से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों में कला संकाय सर्वाधिक लोकप्रिय है तथा उसके बाद विज्ञान व कॉमर्स का आता है। परंतु शोध की स्थिति तो बहुत ही चिंताजनक है जहाँ मात्र 36000 का पूरे देश में नामांकन

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

है जो कुल नामांकन का 0.25 प्रतिशत है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति में यह प्रतिशत क्रमशः 0.22 तथा 0.24 है।

सारणी - ३

शिक्षा व्यय का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) से अनुपात २००५

देश	अनुपात
भारत	3.46
नॉर्वे	7.7
अमेरिका	5.6
स्वीडन	7.4
पाकिस्तान	2.3

सारणी - ४

शिक्षा विकास सूचकांक (ई डी आई) का मूल्य

देश	सूचकांक	रेंक
नार्वे	0.995	1
इंग्लैण्ड	0.980	2
स्वीडन	0.980	4
चीन	0.938	61
भारत	0.700	105
बांग्लादेश	0.692	107
पाकिस्तान	0.537	120

लिंग समानता अनुपात
Gender Parity Index

	कुल	अनुसूचित जाति	अनुसूचित जनजाति
प्रारंभिक शिक्षा (६-१४)	0.92	0.86	0.90
माधयमिक शिक्षा (14-18)	0.80	0.74	0.69
उच्च शिक्षा (18-24)	0.69	0.63	0.55

भारत में विश्वविद्यालयों की स्थापना, ज्ञान के सृजन तथा शोध संवर्द्धन हेतु की गई थी। परंतु आजकल अधिकांश विश्वविद्यालय केवल परीक्षा आयोजित कर डिग्रियाँ देने के संस्थान हो गए हैं। परीक्षा आयोजन का कार्य तो कोई एक स्वतंत्र संस्थान भी कर सकता है इसलिए भारत शोध के क्षेत्र में अन्य देशों की तुलना में काफी पिछड़ा हुआ है। उच्च शिक्षा मंत्री कपिल सिब्बल के अनुसार वर्तमान समय में चीन में प्रतिवर्ष 50000 लोग पीएच.डी कर रहे हैं जबकि भारत में यह संख्या महज 8000 है। स्कैंडेनेवियाई देशों - डेनमार्क, नार्वे, स्वीडन व फिनलैण्ड में प्रति दस लाख में 6700 लोग पीएच.डी करते हैं। अमेरिका में यह संख्या 4373, जापान में 5084, जर्मनी में 3208, चीन में 633 तथा भारत में मात्र 112 है। विशेषज्ञों के अनुसार देश में प्रतिवर्ष 20000 लोग पीएच.डी करें और इनमें से आधे लोगों को भी उद्योग क्षेत्र से समर्थन प्राप्त होवें तो देश बड़ी आर्थिक शक्ति बन सकता है।

नेशनल साइंस फाउण्डेशन एम.एस.ए के अनुसार विज्ञान व इंजीनियरिंग के क्षेत्र में 14000 भारतीयों ने अमेरिकन विश्वविद्यालयों से 2003 में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की जबकि भारत के विश्वविद्यालयों से इसी

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

शोध कार्य में भारतीय दृष्टि एवं प्राचीन भारतीय चिंतन पर शोध की प्रासंगिकता

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

क्षेत्र से आधे से भी कम लोगों ने शोध उपाधियाँ प्राप्त कीं। अमेरिका में कम्प्यूटर तथा सूचना विज्ञान के क्षेत्र में भी शोध उपाधि प्राप्त करने वाले अन्य देशों की तुलना में भारतीय ज्यादा थे।

इससे यह सिद्ध होता है कि भारत के विश्वविद्यालयों ने शोधपरक वातावरण की कमी है। यही कारण है कि भारत के विश्वविद्यालयों के 2005-06 में 11 मिलियन विद्यार्थियों का नामांकन हुआ था उसमें से मात्र 0.64 प्रतिशत विद्यार्थियों ने शोध उपाधि के लिए पंजीयन करवाया। इसके बावजूद भी प्रस्तुत किए शोध ग्रंथों की गुणवत्ता तथा स्तर काफी चिंताजनक स्थिति में है।

यद्यपि जो कुछ शोध हो रहा है इसमें कला तथा विज्ञान संकाय का हिस्सा 73 प्रतिशत है परंतु विभिन्न विषयों में मौलिक भारतीय चिंतन पर शोध नगण्य है।

भारतीय दृष्टि : 'भारतीय' से तात्पर्य 'भारत से संबंधित' है। इस तरह भारतीय का अर्थ उस भाव या विचार से है जिसमें भारत के मूल तत्वों की झलक हो या भारत को संस्कृति से संबंधित हो।

इस दृष्टि से भारतीय के लिए भारत की भूमि, जन संप्रभुता, भाषा और संस्कृति से गहरा लगाव होना आवश्यक है। जिस व्यक्ति या विचार में भारत की भूमि के प्रति कोई आदरभाव न हो, उसे मातृवत नहीं समझता हो, उस पर रहने वालों से बंधुवत व्यवहार नहीं हो, वहां की संस्कृति के प्रति श्रद्धा न हो, वहां की भाषाओं में व्यवहार नहीं करता हो तो उसे भारतीय नहीं कह सकते। शिक्षा में भारतीयता या शिक्षा का भारतीयकरण तब माना जाएगा जब पाठ्यक्रमों में भारतीय मूल्यों का समावेश कर अध्ययन-अध्यापन, शिक्षण-प्रशिक्षण द्वारा छात्र उन मूल्यों को आत्मसात कर लें या उन्हें व्यवहार में लाने के लिए उन्हें प्रेरणा मिले।

भारतीय दृष्टि से तात्पर्य किसी भी समस्या का भारतीय विचार से देखना, समझना, विश्लेषण करना, निर्णय करना तथा क्रियान्वयन करने से है। भारतीय दृष्टि का क्षेत्र अतिविशाल एवं सर्वव्यापक है जिसका संबंध न केवल सृष्टि से है बल्कि परमेष्ठी का भी विचार होता है।

भारतीय, भारतीयकरण, भारतीयता शब्द प्राय: समान रूप से प्रयोग किए जाते हैं। इनसे तात्पर्य 'भारत से संबंधित' हैं। इन शब्दों में वह विचार या भाव प्रकट होता है जिसका संबंध भारतीय तत्वों से हो या भारतीय संस्कृति से संबंधित हो। विश्व में भारतीय संस्कृति निम्न तत्वों के कारण जानी जाती है।

भारतीय चिन्तन / भारतीयता : भारतीय चिन्तन विश्व का प्राचीनतम चिन्तन है 'भारतीय' का अर्थ है ''भारत से संबंधित''। इस दृष्टि से भारतीयता का अर्थ बनता है - वह भाव या विचार जिसमें भारतीय तत्वों की झलक हो या भारतीय संस्कृति से संबंधित हो।

विश्व में भारतीय संस्कृति निम्नांकित तत्वों के कारण जानी जाती है।

१. वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा:

संपूर्ण विश्व को परिवार मानने की विशाल भावना भारतीयता में समाविष्ट हैं।

अयं निज: परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम।।

यह मेरा है, यह पराया है, ऐसे विचार तुच्छ या निम्न कोटि के व्यक्ति करते हैं। उच्च चरित्र वाले व्यक्ति समस्त संसार को ही कुटुम्ब मानते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम का मन विश्व बंधुत्व की शिक्षा देता है।

२. विश्व कल्याण की अवधारणा

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु:ख भाग्भवेत।।

भारतीय वांग्मय में सदा सबके कल्याण की कामना की गई है। उसे ही सार्वभौम मानवधर्म माना गया है। मार्कण्डेय पुराण में सभी प्राणियों के कल्याण की बात की गई है। सभी प्राणी प्रसन्न रहें। किसी भी प्राणी को कोई व्याधि या मानसिक व्यथा न हो। सभी कर्मों से सिद्ध हों। सभी प्राणियों को अपना तथा अपने पुत्रों के हित के समान वर्ताव करें।

३. दुनिया को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प:

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम'

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सारी दुनिया को श्रेष्ठ, सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाएंगे। यह संकल्प भारतीयता के श्रेष्ठ उद्देश्य को व्यक्त करता है। विश्व में ईसाइयत 2000 वर्ष तथा इस्लाम 1400 वर्ष पुराना है। इसके पहले दुनिया में भारतीय संस्कृति का ही बोलबाला था। जिस समय यूरोप के देश जंगली हालत में थे तब हमारी संस्कृति चरम शिखर पर थी, इसलिए भारतीय मनीषी दुनिया के कोने कोने में लोगों को श्रेष्ठ बनाने के लिए गए न कि उनकी भूमि पर कब्जा करने।

४. त्याग की भावना:

ईशावास्योपनिषद के प्रथम श्लोक में ही भारतीयता मं त्याग की भावना स्पष्ट है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगत्यां जगत्!

तेन त्यकतेन भुंजीथा मा गृधा: कस्य स्विद्धनम्!!

अखिल ब्रह्माण्ड में जो कुछ जड़ चेतन स्वरूप जगत है। यह समस्तम ईश्वर में व्याप्त है। उस ईश्वर को साथ रखते हुए त्याग पूर्वक भोगते रहो। उसमें आसक्त नहीं हों क्योंकि धन भोग्य किसका है अर्थात् किसी का भी नहीं। यह राजा से लेकर रंक तक त्यागपूर्वक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देती है। भारत में राजा जनक से राजा हर्ष तक यही प्रेरणा मिलती है। इसी प्रकार मनुस्मृति में भी कहा गया है –

यावद् भ्रियेत् जठरम् तावत् स्वत्वम् हि देहिनाम्।

अधिकम् योभिमन्येत स स्तेनो दण्डम*र्हति।

अर्थात् जितना अपने भरण पोषण के लिए आवश्यक है उतने पर ही मनुष्य का अधिकार है। इससे अधिक का जो उपयोग करता है वह चोर है तथा दण्डनीय है। हमारी संस्कृति का आधार भोग नहीं अपितु त्याग रहा । त्याग से ही अमृतत्व की प्राप्ति होती है। भगवान राम ने लंका को जीतकर उसका राज्य विभीषण को दे दिया। उन्हें उस स्वर्णमयी लंका की तुलना में अपनी मातृभूमि अयोध्या ही अधिक पसंद आई क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है। छत्रपति शिवाजी ने जयसिंह को लिखा कि तुम मुगलों का साथ छोड़ दो और फिर यह सारा राज तुम करो, मुझे राज्य की भूख नहीं है। भरत ने भगवान राम की पादुकाओं को राजसिंहासन पर विराजमान कर स्वयं नंदीग्राम में तपस्वी के रूप में जीवन यापन करते हुए राजकाज का संचालन किया। चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के लिए एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया और स्वयं नि:स्पृह कर्मयोगी की भांति राज से निरासक्त रहे।

५. वितरण के प्रति दृष्टि :

शत् हस्त समाहर सहस्त्रहस्त सं किर।

कृतस्य कार्य*स्य चेह स्फार्ति समावह–अथर्ववेद

हे मनुष्य। तू सौ हाथों से धन प्राप्त कर तथा हजार हाथों वाला बनकर उस धन को दान कर। इस उदार भावना से मनुष्य की अधिक से अधिक उन्नति हो सकती है। इस भावना से समाज में धन व संपत्ति का अधिक समान वितरण हो सकता है।

६. सहिष्णुता :

सहिष्णुता से तात्पर्य सहनशक्ति व क्षमाशीलता से है। धैर्य, विनम्रता, मौन भाव, शालीनता आदि इसके अनिवार्य तत्व हैं। भारतीयता का यह तत्व भारतीय संस्कृति को अन्य संस्कृतियों से अलग करता है। उपनिषद् का ही एक वाक्य है :–

'आ नो भद्रा: कतवो यन्तु विश्वत:'

सभी दिशाओं से अपने पास उत्तम विचार आने दो। पश्चिमी जगत ने अभी तक केवल सहिष्णुता (टोलरेंस) की बात की है। इसका अर्थ है कि दूसरे के विचारों को भी सहन करो। इसमें अहंकार की भावना प्रकट होती है। हमने कहा कि अन्य विचारों का भी सम्मान करो। सम्मान ही नहीं उसमें जो कुछ अच्छा है उसे ग्रहण भी करो।

यही कारण है कि भारत की कभी भी अपने राज्य विस्तार की इच्छा नहीं रही तथा सभी धर्मों को अपने यहाँ फलते–फूलने की जगह दी।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

७. अहिंसात्मक प्रवृत्ति :

अहिंसा से तात्पर्य हिंसा न करने से है। कहा गया है कि 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' सभी प्राणियों को अपनी आत्मा के समान मानो। भगवान महावीर, बुद्ध तथा गांधी ने विश्व को अहिंसा का पाठ पढ़ाया। महाभारत में भी कहा गया है कि मनसा, वाचा तथा कर्मणा से किसी को भी कष्ट नहीं पहुंचाना चाहिए। हमारे ऋषियों ने अहिंसा को धर्म का द्वार बताया है। जैन धर्म में अहिंसा को परम धर्म बताया गया है। कहा गया है है कि ''अहिंसा प्रतिष्ठयाँ तत्सन्धौ वैर त्याग:'' अहिंसा की प्रतिष्ठा होने पर, अहिंसा दृढ़ स्थिति होने पर, हिंसा की सिद्धि हो जाने पर उसके समीपवर्ती प्राणियों में भी बैर का त्याग हो जाता है।

८. आध्यत्मिकता:

आध्यात्मिकता भारतीयता को अन्य संस्कृतियों के गुणों से अलग करती है। ईश्वर के प्रति समर्पण भाव ही आध्यात्मिकता है। भक्ति, ज्ञान व कर्म मार्ग से आध्यात्मिकता प्राप्त की जा सकती है। यह आत्मा के संपूर्ण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। पुरूषार्थ चतुष्टय आध्यात्म में संचालित, प्रेरित व अनुशासित होता है। आध्यात्म के क्षेत्र में भारत को गुरू मानता है।

९. एकेश्वरवाद की अवधारणा:

एकं सद् विप्रा: बहुधा वदन्ति। (ईश्वर एक है। विद्वान उसे अनेकों नाम से पुकारते हैं)

इस्लाम ने भी ईश्वर के एक होने की बात की है परंतु उसी सांस में यह भी कह दिया कि उसका पैगम्बर मौहम्मद है तथा उसके ग्रंथ कुरान में भी आस्था रखने की बात कही। यही बात ईसाइयत में है। भारत में ईश्वर को किसी पैगम्बर व ग्रंथ से नहीं बांधा है।

१०. सर्वधर्म समभाव:

भारत में सभी धर्म राज्य की दृष्टि में समान हैं। पूजा की सभी पद्धतियों का आदर करो तथा सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता बरतो। धर्म, मजहब, पंथ एक नहीं हैं। इस्लाम व ईसाइयत को पंथ / मजहब कह सकते हैं जबकि हिंदु धर्म – जीवन पद्धति है। कहा भी गया है कि

''धारयते इति धर्म:''

अर्थात् जो धारण करता है, वहीं धर्म है। इसका अर्थ है पवित्र आचरण व मानव कर्तव्यों की एक आचार सहिंता। मनु ने धर्म के 10 तत्व बताए हैं :-

1. धृति – संतोष
2. क्षमा – क्षमा कर देना
3. दम – मानसिक अनुशासन
4. अस्तेय – चोरी नहीं करना
5. शौच – विचार व कर्म की पवित्रता
6. इंद्रिय निग्रह – इंद्रियों को वश में करना
7. धी – बुद्धि एवं विवेक का विकास
8. विद्या – ज्ञान की प्राप्ति
9. तप – साधारण तपस्या का जीवन
10. सत्य – सच्चाई

धर्म की इस परिभाषा में कुछ भी सांप्रदायिक नहीं है। भारतीय दृष्टि से लोग अलग पंथ/मजहब/पूजा पद्धति में विश्वास करते हुए इस धर्म का अनुसरण कर सकते हैं। महर्षि अरविंद ने कहा है कि भारतीय का प्राण धर्म है, इसकी आस्था धर्म है तथा इसका भाव धर्म है।

सत्य प्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम'' सत्य में प्रतिष्ठित हो जाने पर व्यक्ति की वाणी अमोघ हो जाती है। ऐसी स्थिति में वह जो कहता है वह पूर्ण हो जाता है।

अस्तेयप्रतिष्ठयां सर्वरत्नोपस्थानम'' अस्तेय में प्रतिष्ठित होने पर अर्थात् मा, वचन एवं कर्म से चोरी न करने का निश्चय करने से सब रत्न प्राप्त हो जाते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्य लाभः ।। ब्रह्मचर्य में प्रतिष्ठित होने पर व्यक्ति का देहबल, मनोबल एवं ऐन्द्रिक बल खूब बढ़ जाता है। इससे उसकी विचार शक्ति बढ़ जाती है, जो शिक्षा एवं शोध में आवश्यक है।

अपरिग्रस्थैर्ये जन्मकथन्तासंबोधः । अपरिग्रह के संसिद्ध हो जाने पर जन्म क्यों हुआ, कैसे हुआ इत्यादि का सम्यक बोधा हो जाता है।

१०. जीवन के प्रति संश्लिष्ट दृष्टि (समग्रता)

भारतीय संस्कृति एक प्रमुख विशेषता समग्र चिन्तन है। संस्कृति की परिभाषा में यह कहा गया है कि जो मनुष्य के शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के विकास की व्यवस्था करे, वही संस्कृति है। पश्चिम अभी तक शरीर और बुद्धि तक ही पहुँच सका है। उनका चिंतन टुकड़ों टुकड़ों में बंटा हुआ है। भारतीय चिंतन मनुष्य को समग्र रूप में देखता ह तथा उसके शरीर, बुद्धि मन एवं आत्मा के सर्वांगीण विकास की चिंता करता है। इसे चतुर्विध सुख भी कहा है। इन चारों प्रकार के सुखों की प्राप्ति के लिए हमारे यहां चार पुरूषार्थ की चर्चा की गई है जैसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। यही भारत का समग्र चिन्तन है।

इन्द मित्रं वरूणमग्निमाहुरथो
दिवयः स सुपर्णो गरूत्मान।
एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति
अग्निं यमं मातरिव्वानमाहुः ।। (ऋग्वेद 1.164/46)

उस ईश्वर को ज्ञानी लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। उसे ही इन्द्र, मित्र, वरूण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गुरूत्मान, यम और मातरिश्वा भी कहत हैं।

११. संघर्ष नहीं सहयोग :

यहां फिर से पश्चिमी संस्कृति का उदाहरण सामने रखना होगा। पश्चिमी चिंतक चार निष्कर्षों पर पहुंचे हैं, ये हैं, अस्तित्व के लिए संघर्ष, योग्यतम को जीने का अवसर, तथा प्रकृति का शोषण तथा व्यक्तिगत अधिकार। इन चारों बातों में पाश्चात्य संस्कृति का सार आ जाता है। भारतीय संस्कृति में संघर्ष नहीं सहयोग है। सर्वोत्तम के अस्तित्व के स्थान पर अंत्योदयी विकास की बात की जाती है। प्रकृति के शोषण के स्थान पर प्रकृति के दोहन पर बल दिया जाता है तथा वैयक्तिक अधिकारों की जगह वैयक्तिक कर्तव्यों पर अधिक विचार किया जाता है।

१२. अनेकता में एकता :

भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि यहां अनेक जातियां, खान-पान, वेश-भूषा, भाषा, प्रांत होने के बावजूद भी राष्ट्र के नाम पर एकता है।

१३. राष्ट्रीयता तथा मानवता में विरोध नहीं :

भारतीयता राष्ट्रीयता की सशक्त भावना पैदा करने का ही दूसरा नाम है। राष्ट्रीयता में केवल राजनीतिक निष्ठा ही शामिल नहीं होती बल्कि देश की विरासत और उसकी संस्कृति के प्रति अनुशक्ति की भावना, आत्मगर्व की अनुभूति आदि भी शामिल है। राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगीत, राष्ट्रभाषा, राष्ट्रीय वीरों, महापुरूषों, राष्ट्रीय नैतिकता तथा मूल्यों के प्रति सम्मान की भावना भी राष्ट्रीयता का एक अंग है। इसलिए भारतीयता सभी भारतीयों में राष्ट्रीयता की सशक्त भावना पैदा करने के सिवाय कुछ भी नहीं है। कुछ लोक मानवता का विचार सबसे पहले करने की बात करते हैं। उनकी दृष्टि में एक देश या राष्ट्र का विचार करना संकीर्णता है। परंतु यह दृष्टिकोण सही नहीं है। देशभक्ति और मानवता की सेवा करने में कोई विरोध नहीं है। मानवता की सेवा करने के लिए देशभक्ति प्रथम सोपान है। जिसे अपनी जननी और जन्मभूमि के प्रति ही प्रेम नहीं है, वह मानवता की क्या सेवा करेगा। हमने भारत को माता के रूप में माना है। इसका कण कण हमारे लिए पवित्र है। स्वामी विवेकानन्द जब विश्वभर से भारतीय संस्कृति का प्रचार कर भारत लौटे तो वे मद्रास की भूमि पर उतरते ही स्वदेश की रेत में लोटपोट हुए।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-3, Issue-2
15 Jul-2012

प्रो. मोहन लाल छीपा
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र विभाग, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

१४. भारत में नारी के प्रति दृष्टिः

भारत में महिलाओं के संबंध में कहा गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः', परंतु पाश्चात्य देशों में नारी को विज्ञापन की वस्तु माना गया। हमारे यहां सरस्वती, लक्ष्मी तथा दुर्गा को विद्या, धन और शक्ति की देवी के रूप में पूजनीय माना गया है।

१५. कार्य करने की प्रवृत्तिः

संगठन के लिए मिलकर चलना, समान भावों को प्रकट करना आवश्यक है। ऋग्वेद के एक मंत्र में ऋषि निर्देश करता है कि हम साथ साथ चलें, साथ साथ बोलें, हम सबके मन समान हों। हमारी मंत्रणाएं समान हो, हमारी सभी समान चितवाली हो। हमारे संकल्प समान हों तथा वे समान प्राप्तव्य विषयों के लिए दो ''समानो मंत्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषां। आगे कहा गया है कि तुम्हारे संकल्प तथा अभिप्राय एक समान हो, तुम्हारे हृदय समान हों, तुम्हारे मन समान हो जिससे तुम्हारा परस्पर कार्य उत्तम रीति से चल सके। ''समानी आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।''

१६. मातृभूमि के प्रति दृष्टिः

अथर्ववेद के 12वां काण्ड के प्रथम सूक्त के रूप में प्रतिष्ठित इस सूक्त के अंतर्गत 63 मंत्र हैं, जिनमें मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम व श्रद्धा को प्रकट किया गया है। सूक्त है 'माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः'' अर्थात् हम जिस धरती पर उत्पन्न हुए हैं उसे हम मातृस्वरूपा मानकर उसकी रक्षा एवं सेवा में लीन होवें। एक अन्य मंत्र में कहा गया है इदं राष्ट्रं पिपृहि सौभाग्य, अर्थात् हे ईश्वर हमारे राष्ट्र को सौभाग्यशाली बनाओ।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN